फील्ड गाइड

THE MENTORING PROJECT

तलाक से निपटना: टूटे हुए हृदय के बाद चंगाई और आशा

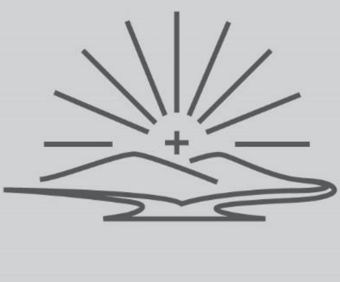

AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

तलाक से निपटना:
टूटे हुए हृदय के बाद
चंगाई और आशा

AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

(लेखक: डॉ. रिचर्ड परहाई
सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-वस्तु

परिचय 4

भाग I: जब वाचा टूट जाती है 6

भाग II: खण्डहरों में जीना 10

भाग III: कलीसिया और खाई 14

भाग IV: अनुग्रह का कठिन मार्ग 17

भाग V: स्वामी का सुधार कार्य 19

निष्कर्ष 22

परिचय

तलाक ताबूत की गरिमा के बिना होने वाला एक अंतिम संस्कार है। यह उस जीवन का प्रत्यक्ष, बिना किसी आडम्बर के दिखाई देने वाला मलबा है, जिसे कभी अनन्तकाल की आधारशिला पर दृढ़ता से स्थापित किया गया था। जब घर में सन्नाटा छा जाता है और कुर्सियाँ खाली पड़ी रहती हैं, तब आत्मा यह महसूस करने लगती है कि यह केवल एक कठिन परिवर्तन या जीवन के पथ का कोई तीखा मोड़ नहीं है। वरन् यह स्वयं का हिंसक विनाश है। उस रात जब डेव मेरे बरामदे पर आया, तो उसने दस्तक देने की भी आवश्यकता नहीं समझी। वह बस वहाँ खड़ा था, मानो किसी रेलगाड़ी ने उसे टक्कर मार दी हो, और उसकी आवाज़ कागज़ जितनी पतली और निर्बल थी। उसने अड़तालीस घंटे ऐसे घर में बिताए थे जो अत्यन्त शान्त था, और वे कमरे मानो उसका उपहास कर रहे थे। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह एक भूत हो। हम ऐसी संस्कृति में रहते हैं जो इस शोक को कृत्रिम रूप से हल्का दिखाने का प्रयास करती है। वह टूटे हुए लोगों से कहती है कि आगे बढ़ो या जीवन का कोई नया अध्याय आरम्भ करो, मानो एक वैवाहिक बन्धन का टूट जाना केवल कोई साधारण प्रशासनिक भूल हो। परन्तु हृदय इस विनाश का सत्य जानता है। वह टूटी हुई वाचा की पीड़ा को अपनी हड्डियों के गूदे तक में एक बोझ के समान अनुभव करता है। यही पतित संसार की वास्तविकता है, और इस धूल से निकल भागने का कोई शीघ्र मार्ग नहीं है।

हमारे विश्वास की प्राचीन शिक्षाओं में, हम वाचाओं की ऐसी गंभीरता के साथ चर्चा करते हैं जिसे आधुनिक मन सहजता से ग्रहण नहीं कर पाता है। विवाह पारस्परिक संतुष्टि पाने के लिए किया गया कोई अनुबन्ध नहीं है; यह पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में बनाई गई एक पवित्र रचना है। जब वह टूटती है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं पृथ्वी ही फट गई हो। जब कोई विश्वासी अपने जीवनसाथी के बिना कलीसिया के प्रवेश कक्ष में खड़ा होता है, तो वह इतनी गहरी लज्जा क्यों अनुभव करता है कि स्वयं को असहाय पाता है? इसका कारण यह है कि हम प्रायः "आदर्श परिवार" के बाहरी स्वरूप को अपनी आत्माओं की वास्तविक दशा के साथ मिला देते हैं। हम रविवार की सुबह उजियाले में प्रवेश करते हैं और अपने स्वयं के उजड़ जाने तथा सभा में बैठे लोगों की प्रतीत होने वाली पूर्णता के बीच की ठंडी और चौड़ी खाई को अनुभव करते हैं। लज्जा मानो हमारी दूसरी त्वचा बन जाती है। वह एक भ्रम है जो हमसे कहता है कि अब हम "मूल्यहीन" हो गए हैं। परन्तु यह उत्पत्ति 3 की मूलभूत वास्तविकता को न समझ पाने का परिणाम है। पतन के बाद से भूमि कठोर हो गई है, और मनुष्य के हृदय उससे भी अधिक कठोर हो गए हैं। तलाक उस संसार का प्रत्यक्ष प्रमाण है जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता है। कभी यह किसी बड़े विश्वासघात का परिणाम होता है, और कभी यह दो प्राणों के धीरे-धीरे क्षीण हो जाने का परिणाम होता है, जिन्होंने उस अनुग्रह को देना ही बन्द कर दिया, जिसे उन्होंने कभी प्राप्त किया था।

तौभी हमारा परमेश्वर उजड़े हुए स्थानों का पुनर्निर्माण करता है। वह विनाश को देखकर अपनी दृष्टि नहीं फेर लेता, न ही अपने समय के लिए कोई अधिक निष्कलंक कार्य खोजने निकल पड़ता है। जब परिवार बिखर जाता है, तब परमेश्वर की प्रभुता कहाँ होती है? वह उसी विपत्ति के ठीक बीचों-बीच उपस्थित होता है। हम इस्राएल के इतिहास को देखते हैं और ऐसे लोगों को पाते हैं जिन्होंने अपनी हर प्रतिज्ञा तोड़ दी थी, जो भटक गए थे (और कभी -कभी तो अपनी ही अभिलाषाओं की धूल में दौड़ते हुए जा गिरे), और जिन्होंने सब कुछ खो दिया। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें नहीं त्यागा था। वह उसी उजाड़ अवस्था में उनके साथ बना रहा। उसने उनके विद्रोह के मलबे में कार्य किया और उसी टूटे-बिखरे अवशेषों में से कुछ नई रचना की। वह टूटे मनवालों का परमेश्वर है—इसलिए नहीं कि उसे पीड़ा में आनन्द आता है, परन्तु इसलिए कि वही अकेला हमारे परिश्रम और पीड़ा को छुटकारे के कार्य में बदलने की सामर्थ्य रखता है।

क्या राजा की दृष्टि में अब मेरी पहचान "तलाकशुदा" हो जाती है? आपकी पहचान आपका वैवाहिक स्तर नहीं है। आप परमेश्वर की सन्तान हैं। आपकी पहचान मसीह के उस अनुग्रह में स्थिर है जो अनुग्रह आपको बिना योग्यता के मिला है। आप उसी के हैं। उसने किसी सजे-सँवरे, पूर्ण परिवार के लिए अपना प्राण नहीं दिया। उसने आपके लिए —वास्तव में आपके लिए—अपने प्राण दिए; उस व्यक्ति के लिए जिसकी आँखें आँसुओं से लाल हैं और जिसका बिस्तर खाली पड़ा है। इनमें से किसी भी बात से वह आश्चर्यचकित नहीं होता। इसलिए हमें अपनी पीड़ा का अच्छी रीति से प्रबन्धन करना चाहिए। सम्भव है कि आपने जीवन के इस पड़ाव को नहीं चुना हो, पर न्तु आपको इसका प्रबन्धन बहुत ईमानदारी के साथ करना होगा। जिस जीवन के दो टुकड़े हो गए हों प्रतीत होता हुआ दिखाई दे, उसका स्वामी आज भी वही है। कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। परमेश्वर अभी भी इस विपत्ति के हाशियों पर अपनी योजना लिख रहा है, और वह टूटे हुए मन वालों के निकट है।, यह कोई खोखली कहावत नहीं है। यह उस परमेश्वर के स्वभाव पर आधारित प्रतिज्ञा है जो मरे हुओं को जीवित करने का विशेषज्ञ है। आइए, हम स्पष्ट रूप से देखें कि जब वाचा टूटती है, तब क्या होता है।

1

जब वाचा टूट जाती है

प्रतिज्ञा का भार

हम ऐसे संसार में रहते हैं जो शब्दों को सस्ते प्लास्टिक के समान समझता है —अर्थात् ऐसी वस्तु के समान जिसे उपयोग करने के बाद फेंक दिया जाता है, जो बड़े पैमाने पर बनाई जाती है, और जिसका स्वरूप हमारी तत्काल इच्छा के अनुकूल न होने पर उसे आसानी से त्याग दिया जाता है। परन्तु परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था में, प्रतिज्ञा लोहे और हड्डी की बनी होती है। वह ऐसा भार है जो आत्मा को परमेश्वर के सम्मुख की गई प्रतिज्ञा से बाँधे रखता है। जब हम विवाह के प्रति परमेश्वर के हृदय को देखते हैं, तो हमें भविष्यद्वक्ता मलाकी के असुविधाजनक और तीखे सत्य से आरम्भ करना चाहिए। यह पाठ हमें बताता है कि परमेश्वर तलाक से घृणा करता है। यह कोई साधारण अप्रसन्नता या स्थिरता के प्रति मात्र एक प्राथमिकता नहीं है। यह उस वस्तु के फाड़े जाने पर परमेश्वर का गहरा शोक है जिसे उसी ने स्वयं जोड़ा था। यह उस सृष्टिकर्ता की भाषा है जो अपनी ही कारीगरी को उन लोगों के हाथों धूल में चूर -चूर होते देख रहा है जिन्होंने उसकी रक्षा करने की शपथ ली थी। विवाह केवल सेवाओं के पारस्परिक आदान -प्रदान का अनुबंध या सुविधा का समझौता नहीं है। वह एक ऐसी वाचा होती है, जो जीवन भर के लिए ठहराई जाती है। वह एक-तन होने का ऐसा भेद है, जो मसीह और उसकी कलीसिया के बीच के सम्बन्ध को दर्शाता है।

बाइबल विवाह की प्रतिज्ञा के वास्तविक भार के विषय में क्या कहती है? इसका उत्तर स्वयं वाचा के मूल तत्त्व में निहित है। जब एक पुरुष और एक स्त्री परमेश्वर के सम्मुख खड़े होकर एक-दूसरे के प्रति जीवन भर के लिए प्रतिज्ञा करते हैं, तब वे केवल कोई प्रेमपूर्ण संकेत नहीं कर रहे होते है। वे परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की ओर संकेत करने वाला एक चिन्ह स्थापित कर रहे होते हैं। उस प्रतिज्ञा को तोड़ना उस चिन्ह को चूर-चूर कर देना है। इससे संसार को यही सन्देश मिलता है कि प्रतिज्ञाएँ अस्थायी होती हैं, और "जब तक मृत्यु हमें अलग न कर दे" का अर्थ वास्तव में यह है कि "जब तक मैं ऊब न जाऊँ"। परमेश्वर तलाक से घृणा करता है क्योंकि वह वाचा से प्रेम करता है। वह उस एकता से प्रेम करता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करती है। वह उस हिंसा से घृणा करता है जो उसके फाड़े जाने में निहित है। यही इस ईश्वर विज्ञान का कठोर सत्य है—हम इसकी गंभीरता को मधुर बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। यह दिखावा नहीं कर सकते कि टूटा हुआ विवाह केवल "जीवन का एक परिवर्तन" है, यह परमेश्वर की पवित्रता के विरुद्ध दूसरी हिंसा है। यह समस्त सृष्टि के लिए त्रासदी है, क्योंकि यह एक प्रतिज्ञा की मृत्यु की गवाही है। हमें इसके भार को महसूस करना चाहिए। प्रतिज्ञा कोई हल्की बात नहीं होती है। यह महिमा का ऐसा भार होता है जिसे कब्र तक बने रहने के लिए ठहराया गया था।

वाचा का टूटना उन बच्चों को भी पीड़ा पहुँचाता है जो यह नहीं समझ पाते कि मम्मी -पापा अब साथ में क्यों नहीं रहते हैं। और तलाक समाज को भी वैसे ही अस्थिर कर देता है, जैसे किसी छत से उसकी कड़ियाँ निकाल दी जाएँ।

फिर भी, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम मलाकी के वचनों को उस व्यक्ति के विरुद्ध हथियार न बना दें जिसे इस विनाश के बीच छोड़ दिया गया है। परमेश्वर की तलाक के प्रति घृणा मुख्य रूप से उस पाप के प्रति है जो उसका कारण बनता है—अर्थात् हृदय की कठोरता, विश्वासघात, और वह संवेदनहीन उदासीनता जो एक परिवार को टूटने के कगार तक ले जाती है। वह उस पीड़ा से घृणा करता है जो उन बच्चों को पहुँचाती है जिन्हें अब दो अलग -अलग संसारों में रहना पड़ता है। वह इस बात से भी घृणा करता है कि यह एक स्त्री या पुरुष को ऐसा अनुभव कराता है मानो उसे त्याग दिया गया हो। प्रतिज्ञा का भार इसलिए भारी होता है क्योंकि वाचा का प्रतिफल महिमामय होता है। हम यह दिखावा करके विवाह का आदर नहीं करते कि तलाक एक सरल बात है; हम उसका आदर यह स्वीकार करके करते हैं कि उसका विनाश आत्मिक मृत्यु का एक रूप है। यही वह कठोर वास्तविकता है जहाँ हमारे ऊँचे आदर्श हमारी असफलताओं के कुचल देने वाले भार से टकराते हैं। परन्तु जब तक हम व्यवस्था की छाया में खड़े नहीं होते, तब तक हम अनुग्रह से आरम्भ नहीं कर सकते हैं। हमें स्वीकार करना चाहिए कि वाचा को तोड़ना उस परमेश्वर का अपमान करना है जो कभी अपना वचन नहीं तोड़ता। यह सृष्टि की व्यवस्था में एक दरार है, परिवार के ताने-बाने में एक गहरा चीरा है, जो आत्मा पर एक स्थायी घाव छोड़ जाता है।

दया की अनुमति

यदि परमेश्वर वाचा तोड़े जाने से घृणा करता है, तो हमें यह कठिन और पीड़ादायक प्रश्न पूछना चाहिए: **यदि परमेश्वर तलाक से इतनी घृणा करता है, तो उसने पतित संसार में इसकी अनुमति क्यों दी?** इसका उत्तर हमें गलील की धूलभरी गलियों में मिलता है, जहाँ फरीसियों ने व्यवस्था और उसके अपवादों से सम्बन्धित प्रश्नों के द्वारा यीशु को फँसाने का प्रयास किया। यीशु उन्हें आरम्भ की ओर—उस रचना की ओर ले गया जो मनुष्य के हृदय पर पाप की धूल जमने से पहले ही थी। परन्तु यीशु ने कठोर वास्तविकता को भी स्वीकार किया। उसने हृदय की कठोरता की बात की। तलाक परमेश्वर की मूल योजना नहीं थी, परन्तु पाप की उपस्थिति के कारण उसने दया करके इसकी अनुमति दी। ऐसे संसार में जहाँ पुरुष अपनी पत्नियों से विश्वासघात करते हैं और स्त्रियाँ अपने पतियों को छोड़ देती हैं, परमेश्वर ने निर्बलों की रक्षा के लिए व्यवस्था की एक कानूनी सीमा ठहराई। व्यवस्था उस कार्य का समर्थन नहीं थी, वरन् टूटी हुई प्रतिज्ञा के कारण पीड़ित हुए व्यक्ति की रक्षा थी।

तलाक के लिए बाइबल द्वारा दिए गए आधार—जैसे यौन अनैतिकता और अविश्वासी जीवनसाथी के द्वारा छोड़ दिया जाना—कोई ऐसे साधन नहीं हैं जिनसे व्यक्ति बिना किसी परिणाम के बचकर निकल जाए। वे उस पक्ष के लिए दया के कारण दी गई छूट हैं जिसे अपने जीवन के खण्डहरों के बीच छोड़ दिया गया है। मत्ती 19 और 1 कुरिन्थियों 7 आत्मा के लिए सुरक्षा घेरे के समान हैं। जब कोई जीवनसाथी व्यभिचार के द्वारा "एक-तन" के सम्बन्ध को तोड़ देता है, तब वह पहले ही आत्मिक रूप से तलाक दे चुका होता है। कानूनी आदेश केवल उस विनाश को स्वीकार करता है जिसे पाप पहले ही उत्पन्न कर चुका है। यह एक दुःखद अनुमति है। मानो परमेश्वर का यह कहना है कि वह विश्वासयोग्य व्यक्ति को किसी छाया मात्र से बँधा रहने के लिए विवश नहीं करेगा। वास्तविकता यह है कि कभी -कभी पाप इतना गहराई तक प्रवेश कर जाता है और इतना विनाशकारी हो जाता है कि वह सम्बन्ध अब नहीं बना रह सकता है। यह अनुमति इस बात की स्वीकृति है कि हम "पहले से, परन्तु अभी नहीं" की अवस्था में जी रहे हैं—ऐसे संसार में जहाँ अब भी काँटे उगते हैं और मन अब भी भटक जाते हैं।

क्या तलाक की बाइबल आधारित अनुमति दुर्व्यवहार पर भी लागू होती है? परमेश्वर केवल तलाक से ही घृणा नहीं करता, वह घरेलू हिंसा से भी घृणा करता है (भजन संहिता 11:5)। पतियों को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करना है जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया, और स्त्रियों को भी अपने पतियों के अधीन वैसे ही रहना चाहिए जैसे वे प्रभु के अ धीन रहती हैं। परन्तु क्या प्रभु कभी अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करेगा? यद्यपि पवित्रशास्त्र घरेलू हिंसा की स्थिति में तलाक की आज्ञा नहीं देता, तौभी वह किसी अत्याचारी जीवनसाथी के साथ रहने की भी आज्ञा नहीं देता है। पत्नियों या पतियों को अपनी और अपने बच्चों की रक्षा के लिए अत्याचारी से अलग होना पड़ सकता है तथा आवश्यक कदम (पास्टर से सलाह या कानूनी कदम) उठाने पड़ सकते हैं। प्राचीनों और पास्टरों को निर्बलों की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए —परामर्श कार्यक्रमों, कलीसियाई अनुशासन, अत्याचार करने वालों के लिए परामर्श, और फिर विवाह की पुनर्स्थापना के लिए परामर्श के द्वारा आगे आना चाहिए। यदि फिर से एक साथ रहना असम्भव सिद्ध हो जाए, तब लम्बे समय तक अलग रहना या तलाक ही एकमात्र विकल्प रह जाता है।

क्या बाइबल आधारित तलाक की अनुमति का अर्थ यह है कि विश्वासी के लिए फिर से विवाह करना हमेशा एक विकल्प होता है? यहीं पर व्यवस्था की कठोरता और जीवन की वास्तविकता आमने-सामने आ जाती है। मसीही परम्परा में सामान्यतः यह माना जाता है कि जहाँ विवाह टूटने के लिए बाइबल आधारित आधार उपस्थित हों, वहाँ निर्दोष पक्ष प्रभु में फिर से विवाह करने के लिए स्वतंत्र होता है। परन्तु यह कभी भी पूर्ण उत्सव का अवसर नहीं होता है। यह इस गंभीर सत्य की स्वीकृति है कि मूल वाचा अपरिवर्तनीय रूप से टूट चुकी है। पुनर्विवाह सामान्य अनुग्रह का एक वरदान है—एक ऐसा साधन जिसके द्वारा स्वामी इस पतित संसार के बीच संगति और जीवन में व्यवस्था प्रदान करता है। परन्तु इसके प्रति अत्यन्त गंभीरता और परमेश्वर के भय के साथ आगे बढ़ना चाहिए। यह ऐसा उपाय नहीं है कि मानो पहली प्रतिज्ञा कभी की ही नहीं गई थी और अब सब कुछ फिर से आरम्भ हो रहा है। इसके विपरीत, यह एक नया मार्ग है जो पुराने विवाह के टूटे हुए अवशेषों के ऊपर निर्मित होता है। हम व्यवस्था में कोई छूट नहीं खोज रहे हैं; परन्तु हम उस राजा की दया खोजते रहे हैं जो जानता है कि उसकी सन्तान मिट्टी से रची गई है। उसकी दया से भरी अनुमति लापरवाही करने की छूट नहीं है; वह उन लोगों के लिए शरणस्थल है जिन्हें किसी दूसरे के कठोर हृदय ने चूर-चूर कर दिया है।

पतन से उत्पन्न संघर्ष

तलाक की इस गहरी खाई को हम तब तक नहीं समझ सकते, जब तक हम उत्पत्ति 3 के काँटों और ऊँटकटारों के पास वापस नहीं लौटते हैं। पतन ने केवल भूमि के साथ हमारे सम्बन्ध को ही नष्ट नहीं किया; वरन् उसने उस व्यक्ति के साथ भी हमारे सम्बन्ध को बिगाड़ दिया जो हमारे साथ सोता है। "एक तन" की एकता शक्ति-संघर्षों, छल-कपट, और प्रभुत्व स्थापित करने की निर्मम इच्छा का स्थान बन गया है। तलाक पतन का अन्तिम फल है। यह इस कठोर और निर्दयी सत्य का प्रमाण है कि सर्प अब भी वाटिका में फुसफुसा रहा है। जब हम किसी परिवार को बिखरते हुए देखते हैं, तब हम उसी सड़न को देख रहे होते हैं जो शरीर को निर्बल कर देती है और मन को भटका देती है। यही पतन से उत्पन्न होने वाला संघर्ष है। यही वह वास्तविकता है जो कि हमारे सबसे पवित्र सम्बन्ध भी मनुष्य की पूर्ण भ्रष्टता की सड़न से अछूते नहीं हैं। हम उतने अच्छे नहीं हैं जितना हम अपने विषय में सोचते हैं। हम उनको भी मार डाल सकते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं। हम अपने ही अहंकार में इतने डूब सकते हैं कि केवल उसकी गर्मी महसूस करने या उसकी लपटों को देखने के लिए अपना घर भी जला सकते हैं।

प्रत्येक तलाक मनुष्य की पतित दशा के कष्टों का स्मरण कराता है। यह इस बात का कठोर और स्पष्ट प्रमाण है कि संसार वैसा नहीं है जैसा उसे होना चाहिए। परन्तु इस उजाड़ के बीच आत्मा प्रायः एक भयानक भय से पुकार उठती है। क्या तलाक क्षमा न किया जाने वाला पाप है जो परमेश्वर की दृष्टि में विश्वासी पर सदा के लिए कलंक लगा देता है? ऐसे अनेक स्त्री-पुरुष हैं जो बीस वर्षों तक कलीसिया की पिछली बेंचों पर बैठे रहे। वे यह मानते हैं कि उनके तलाक के आदेश -पत्र पर लगी स्याही लज्जा का ऐसा स्थायी चिन्ह है जिसे मसीह का लहू भी कभी नहीं मि टा सकता है। उन्हें ऐसा लगता है मानो वे टूटे हुए और अस्वीकार्य व्यक्ति हैं, जिन्हें कलीसिया के "वास्तविक" जीवन से सदा के लिए बाहर कर दिया गया है। यह अधोलोक से निकला हुआ झूठ है। केवल एक ही ऐसा पाप है जिसे क्षमा नहीं किया जाता, और वह विवाह का टूट जाना नहीं है। यीशु मसीह का क्रूस आपके तलाक से कहीं अधिक बड़ा है। वह आपकी असफलता की गहरी खाई से भी अधिक गहरा है।

यदि हम अपने पापों का अंगीकार कर लें —उन पापों का भी जिनके कारण एक परिवार बिखर जाता है —तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे। मेम्ने का लहू व्यभिचारी, छोड़े गए जीवनसाथी, कठोर हृदय वाले और टूटे हुए लोगों के लिए बहाया गया है। आपका नाम "तलाकशुदा" नहीं है; आपका नाम "मूल्य देकर मोल लिया गया है।" आपकी वैवाहिक वाचा का टूटना एक दुःखद घटना है, हाँ। यह पतन का परिणाम है, हाँ। परन्तु यह ऐसा स्थान नहीं है जहाँ तक परमेश्वर का अनुग्रह न पहुँच सके। अनुग्रह बेहतर जीवन पाने की कोई "युक्ति" नहीं है; यह ऐसी दृढ़ और सामर्थी दया है जो हमें हमारे ही किए हुए विनाश की धूल से उठाकर खड़ा करती है। यदि आपका वैवाहिक जीवन समाप्त हो गया है, तो आपको उसके लिए शोक करना चाहिए। इस बिखराव के लिए आपको अपने हिस्से का उत्तरदायित्व भी स्वीकार करना चाहिए। परन्तु आपको अपनी असफलता की आराधना नहीं करनी चाहिए। आपको एक टूटे हुए जीवन का प्रबन्धक बनाया गया है, और स्वामी अब भी उन खण्डहरों में रुचि रखता है। वह पुनरुत्थान का परमेश्वर है। हो सकता है कि वह आपके विवाह को पुनर्जीवित न करें, परन्तु वह आपको नया जीवन देने के लिए पूरी रीति से प्रतिबद्ध है। मार्ग कठिन है और काँटे तीखे हैं, परन्तु वह प्राचीन मार्ग इन खण्डहरों के बीच से होकर क्रूस के चरणों तक पहुँचता है, जहाँ हर पाप मिटा दिया जाता है और हर प्राण उसके अनुग्रह के द्वारा नया बना दिया जाता है।

वाचा का भार बना रहता है, दया की अनुमति स्थिर रहती है, और पतन से उत्पन्न संघर्ष भी बने रहते हैं। फिर भी, इन सबके ऊपर परमेश्वर की प्रभुता इन खण्डहरों पर शासन करती है। आपकी मेज के पास पड़ी खाली कुर्सी को देखकर वह आश्चर्यचकित नहीं होता। लाल आँखों और धीमी पड़ती हुई आवाज से वह घृणा नहीं करता है। वह आपके साथ इन खण्डहरों में खड़े रहता है—दर्शक के रूप में नहीं, परन्तु घर के स्वामी के रूप में, जो भली -भाँति जानता है कि मलबे से कैसे निर्माण करना है। हमें लज्जा को वेदी पर छोड़ देना चाहिए और नए दिन की बुलाहट को स्वीकार करना चाहिए। हमें लंगड़ाते हुए उस प्राचीन मार्ग पर चलते रहना चाहिए—परन्तु चलते ही रहना चाहिए।

2

खण्डहरों में जीना

लज्जा की खाई

नए तलाकशुदा व्यक्ति का स्वागत आराधनालय में एक विशेष प्रकार की चुप्पी से होता है। यह उन लोगों की चुप्पी होती है जो नहीं जानते कि कहाँ देखें। खाली हाथ लेकर कलीसिया के सभा -भवन में प्रवेश करना ऐसा लगता है मानो आपकी आत्मा के भीतर तक लज्जा का लाल अक्षर सिला हुआ है। आप स्थिर और व्यवस्थित परिवारों को देखते हैं, और आपको उनकी पूर्णता तथा आपने बिखराव के बीच की खाई ऐसी प्रतीत होती है मानो नुकीले काँच से भरे हुए हजारों मील की दूरी हो। वे बेंचें, जो कभी शरण स्थान थीं, अब ऐसी अदालत जैसी लगती हैं जहाँ आपको अयोग्य ठहराया गया है। आप इस सुन्न कर देने वाली लज्जा का सामना तब करते हैं जब आप यह महसूस करते हैं कि यह अहंकार का घमण्ड है, जो अपने दिखावे के द्वारा स्वयं को बचाने का प्रयास कर रहा है। हम प्रायः वाचा की टूटने की हानि से अधिक अपनी प्रतिष्ठा के लिए शोक करते हैं।

परन्तु खण्डहरों में रहते हुए कलीसिया में प्रवेश करना नम्रता के उस प्राचीन मार्ग पर खड़ा होना है। और यह स्वीकार करना है कि आप ठीक वही हैं जो बाइबल कहती है: अर्थात रोटी की आवश्यकता वाला एक भिखारी। यह संघर्ष एक वरदान है—यह आपकी "घरेलू धार्मिकता" को दूर कर देता है। आप कभी कलीसिया में इसलिए स्थान के योग्य नहीं थे कि आप एक "अच्छे जीवनसाथी" थे, परन्तु इसलिए थे कि आप छुटकारा पाए हुए पापी हैं। यदि कलीसिया एक चिकित्सालय है, तो खण्डहरों में आपकी उपस्थिति ही इसका उद्देश्य है। आपको अपने घाव को छिपाने की आवश्यकता नहीं है। घर के स्वामी को "तुच्छ जाना गया और त्याग दिया गया", वह दुखी का पुरुष था और अस्वीकार किए जाने के दुःख से परिचित था। बेंचों से अपनी दृष्टि हटाकर उसके क्रूस की ओर देखो। एकमात्र निर्णय जो मायने रखता है, वह उसी का है, जो कहता है कि आपका ऋण चुका दिया गया है। आप इस उद्देश्य से प्रवेश नहीं करते कि यह सिद्ध करें कि आप पूर्ण हैं, परन्तु यह घोषित करने के लिए आते हैं कि जब आप विश्वासयोग्य नहीं रहते, तब भी परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहता है। यह खाई आपके वैवाहिक स्तर से नहीं, वरन् उसके लहू के द्वारा मिटाई जाती है। आप उस दयालु परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रवेश करते हैं।

पहचान का संकट

जब कागज़ों पर हस्ताक्षर हो जाते हैं और सामान अपने -अपने स्थानों पर पहुँच जाता है, तब भीतर एक भयानक खालीपन आ जाता है। वर्षों तक आपकी पहचान एक भूमिका से बँधी रही थी—अर्थात् पति या पत्नी के रूप में। अब जब वह बन्धन टूट गया है, तो आपको ऐसा लगता है मानो आप अन्धकारमय शून्य में बहते चले जा रहे हैं। यह अस्तित्व का गहरा संकट है; आप दर्पण में देखते हैं और वहाँ एक ऐसा अपरिचित व्यक्ति दिखाई देता है जिसकी पहचान कभी किसी दूसरे की

उपस्थिति से निर्धारित होती थी। परन्तु मसीह में आप कौन हैं? आप ठीक वही हैं जो "मैं स्वीकार करता/करती हूँ" कहने से पहले थे। आप राजा की सन्तान हैं और उस अन्तिम नगर के नागरिक हैं जहाँ विवाह की आवश्यकता नहीं होगी। हमारी परम्परा के अनुसार हमारी पहचान का आधार परमेश्वर की प्रभुता को चुन लेना है। इसलिए आपकी पहचान कभी "विवाहित" नहीं थी; वह तो "चुने हुए" की पहचान रही है।

संसार आपको किसी टूटे हुए टुकड़े या ऐसी खराब पड़ी मशीन के समान समझ सकता है जिसने अपना काम करना बन्द कर दिया हो। परन्तु दुःख की बात यह है कि इस विषय में कभी-कभी कलीसिया का व्यवहार उससे भी अधिक बुरा होता है। इतिहास में कलीसिया ने प्रायः तलाकशुदा लोगों के साथ अ धिक कठोरता का व्यवहार किया है। उसने तलाकशुदा मसीहियों पर पीड़ादायक—और कई बार दोष लगाने वाला—कलंक लगा दिया, बिना अनुग्रह के यह समझने का प्रयास किए बिना कि उनके तलाक के कारण क्या थे।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अब यह प्रवृत्ति बदल रही है। संसार तलाक को प्रायः जीवन की एक अनिवार्य वास्तविकता मानकर स्वीकार कर लेता है। (यही एक कारण है कि कुछ लोग विवाह ही नहीं करते हैं।) परन्तु रूढ़िवादी कलीसियाएँ भी, जो पहले हर प्रकार के तलाक का कठोरता से न्याय करती थीं, अब अपना दृष्टिकोण बदल रही हैं। वे यह समझने लगी हैं कि प्रत्येक विश्वासी किसी न किसी प्रकार से टूटा हुआ है, और यह भी पहचानने लगी हैं कि कलीसिया एक चिकित्सालय है।

इसके परिणामस्वरूप मसीही समुदाय तलाकशुदा लोगों को भी कलीसिया के जीवन का एक सामान्य अंग मानकर अधिक सहजता से स्वीकार करने लगे हैं। यह अलग रह रहे और तलाकशुदा लोगों को कलीसिया के जीवन में बनाए रखने की दिशा में एक उत्तम कदम है, जहाँ मसीह में भाई-बहन के रूप में स्वीकार किया जाना, उन्हें चंगाई पाने का अवसर देता है।

तलाक ऐसा पाप नहीं है जिसके लिए क्षमा नहीं मिल सकती और जो किसी व्यक्ति की पहचान से "मसीही" होने का स्थान छीन ले। तलाकशुदा विश्वासी भी मसीह के साथ एक हो सकते हैं और मसीह के ही बने रहते हैं। परमेश्वर बीती हुई असफलताओं के लिए क्षमा, वर्तमान में परिवर्तन के लिए सामर्थ्य, और भविष्य के लिए आशा प्रदान करता है।

ऐसा सोचना अधोलोक से निकला हुआ झूठ है। सुसमाचार का सामर्थी अनुग्रह हमें बताता है कि मसीह के साथ हमारी एकता ही वह एकमात्र सम्बन्ध है जो वास्तव में और अन्ततः हमारी पहचान निर्धारित करता है। सांसारिक वैवाहिक सम्बन्ध तो केवल छाया हैं, अर्थात् अस्थायी संकेत है, जो मेम्ने के विवाह-भोज की ओर संकेत करता है। जब मार्ग सूचक स्तम्भ गिर जाता है, तब भी वास्तविकता बनी रहती है। आपको अपने जीवन की धड़कन जीवनसाथी की दृष्टि में नहीं, परन्तु परमेश्वर के वचन में खोजनी है। आप एक याजक, एक पवित्र जन, और एक सैनिक हैं। "पति" या "पत्नी" होना तो केवल कुछ समय के लिए निभाई जाने वाली एक भूमिका थी, परन्तु "छुटकारा पाए हुए" होना आपकी सर्वदा की पहचान है। यह अनुभव किसी अंग के कट जाने जैसा प्रतीत हो सकता है, परन्तु वास्तव में यह शुद्ध करने वाली आग है। स्वामी आपके आत्मनिर्भरता के प्रत्येक सहारे को दूर कर रहा है ताकि आप उसके उस अनुग्रह की अटल चट्टान पर दृढ़ होकर खड़े हो सकें, जिसके लिए आप स्वयं कभी योग्य नहीं थे। आप किसी भी अर्थ में "अधूरे" नहीं हैं। आप वह व्यक्ति हैं जिसे मूल्य देकर मोल लिया गया है, और आपका स्वामी अब भी आपके शेष जीवन के लिए एक बहुत बड़ी बुलाहट रखता है।

आदर्श परिवार की मूर्ति

हमारे आधुनिक आराधना-स्थलों में यह आदत बन गई है कि हम उस परमेश्वर की आराधना करने से अधिक 'घरेलू स्वप्न' की आराधना करते हैं, जो उसे बनाए रखता है। हमने सुखी, छोटे परिवार को लकड़ी और पत्थर की एक मूर्ति बना दिया है। हम यह मान लेते हैं कि यदि हम सही बाइबल आधारित सिद्धान्तों का पालन करें और उचित प्रार्थनाएँ करें, तो हमें सहज जीवन और स्थिर परिवार का आश्वासन मिल ही जाएगा। हम "परमेश्वर का आदर करने वाले घर" को मानो किसी स्वचालित यंत्र के समान समझते हैं: परिश्रम करो और बदले में आदर्श परिवार पाओ। जब तलाक होता है, तो वह इस मूर्ति को चूर-चूर कर देता है, और उससे उठने वाली धूल प्रायः हमारी आँखों को अन्धा कर देती है। तब हम केवल इसलिए नहीं टूटते कि हमने अपना जीवनसाथी खो दिया है, वरन् इसलिए भी कि हमारा "देवता"—आदर्श पारिवारिक जीवन का स्वप्न—हमें धोखा दे गया है।

आप एक सुखी परिवार की छवि की आराधना करना छोड़कर उस परमेश्वर की आराधना कैसे आरम्भ कर सकते हैं जो जीवन की अव्यवस्था में भी आपके साथ रहता है? इसका आरम्भ इस बात को स्वीकार करने से होता है कि आपका "आदर्श परिवार" कभी भी आपके जीवन का स्रोत नहीं था। वह तो केवल एक वरदान था, जो कुछ समय के लिए आपको सौंपा गया था; और सम्भव है कि आपने उस वरदान पर उसके देने वाले से भी अधिक भरोसा करना आरम्भ कर दिया हो। हम प्रायः पवित्रता की वास्तविकता से अधिक सम्पूर्णता की छवि को महत्त्व देते हैं। परन्तु पवित्रता प्रायः टूटे हुए परिवार की भट्ठी में गढ़ी जाती है। परिवार के इसी कठिन और अस्त-व्यस्त जीवन—बच्चों को अपने पास रखने के लिए होने वाले विवादों, तंगी भरी आर्थिक स्थिति और खाली बिस्तरों —के बीच हम अन्ततः पृथ्वी पर "स्वर्ग" खोजने का प्रयास छोड़ देते हैं और राजा की खोज करना आरम्भ करते हैं।

बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर नहीं है जो केवल तब उपस्थित होता है, जब जीवन में सब कुछ व्यवस्थित और स्थिर रहता है। वह वही परमेश्वर है जिसने जंगल में एक तम्बू में वास किया। वह वही परमेश्वर है जो विदेशी सत्ता के अधीन देश के धूल भरे मार्गों पर चला। वह वही परमेश्वर है जिसका जन्म एक गौशाला में हुआ और जिसने नगर के बाहर कूड़े के ढेर के समान तुच्छ समझे गए स्थान पर प्राण त्यागे। वह उजड़े हुए जीवन से अपरिचित नहीं है। यदि आप इस प्रतीक्षा में हैं कि आपका जीवन फिर से "पूर्ण" हो जाए, तब ही आप उसकी आराधना करेंगे, तो वास्तव में आप अपने ही सुख-सुविधा की आराधना कर रहे हैं। उजड़े हुए जीवन में प्रबन्धन का अर्थ है कि आप अभी, इसी समय, चारों ओर बिखरे विनाश के बीच भी परमेश्वर का आदर करें। इसका अर्थ यह समझना है कि एक टूटा हुआ व्यक्ति, जो एक टूटे हुए घर में रह रहा है, परमेश्वर के लिए ऐसी स्तुति का बलिदान चढ़ा सकता है जो उन लोगों की रटी -रटाई प्रार्थनाओं से कहीं अधिक बहुमूल्य है, जिन्होंने कभी किसी बहुत बड़ी हानि का अनुभव नहीं किया है।

हमें "आदर्श परिवार" की मूर्ति को तोड़ देना चाहिए और उसके स्थान पर क्रूस से मिलने वाली अटल आशा को स्थापित करना चाहिए। क्रूस कोई सजा-सँवरा प्रतीक नहीं है। वह संसार की दृष्टि में हिंसा, लहू और "पराजय" का एक ऐसा क्षण था, जो समस्त जीवन का स्रोत बन गया। आपका जीवन संसार की दृष्टि में, और कलीसिया की बेंचों पर बैठे हुए उन "आदर्श" परिवारों की दृष्टि में, असफल दिखाई दे सकता है; परन्तु स्वामी के हाथों में वही अनुग्रह की एक अद्भुत रचना का आधार बन जाता है। अब आप उस स्थान पर पहुँच गए हैं जहाँ आप देख सकते हैं कि केवल परमेश्वर ही पर्याप्त है। न कि

स्थिर विवाह के साथ परमेश्वर। न कि सम्मानित प्रतिष्ठा के साथ परमेश्वर। केवल परमेश्वर। जब यह मूर्ति गिर जाती है, तब सच्चा परमेश्वर अन्ततः प्रकट होता है। जब सब लोग छोड़कर चले जाते हैं, तब भी वही बना रहता है। वह धूल से नया निर्माण करता है। और वह आपको, एक-एक पीड़ादायक कदम के साथ, उस नए नगर की ओर ले जा रहा होता है जहाँ प्रत्येक आँसू पोंछ दिया जाएगा और प्रत्येक उजड़ा हुआ जीवन फिर से स्थापित किया जाएगा।

3

कलीसिया और खाई

बेंच पर अकेलापन

विवाह के टूटने के बाद के सप्ताहों और महीनों में एक ऐसी तीखी और भीतर तक चुभने वाली पीड़ा का अनुभव होता है, जो समय के साथ और गहरी होती चली जाती है। आप उसी आराधनालय में प्रवेश करते हैं जहाँ पहले आप एक जोड़े का हिस्सा थे, और अचानक आपको एहसास होता है कि अब आप स्वयं इस बात का जीवित प्रमाण बन गए हैं कि देखने में सबसे दृढ़ प्रतीत होने वाले विवाह भी बिखर सकते हैं। आप अपने सामाजिक दायरे में एक सूक्ष्म, लगभग दिखाई न देने वाला परिवर्तन अनुभव करने लगते हैं। रात्रि-भोज के निमंत्रण धीरे-धीरे बन्द होने लगते हैं। जो विवाहित मित्र कभी आपके जीवन का हिस्सा थे, वे भी अब आपसे दूरी बनाने लगते हैं। जब आप उनकी ओर बढ़ते हैं, तो उनकी दृष्टि मानो बाहर जाने वाले मार्ग की ओर चली जाती है। ऐसी स्थिति में इसे अपने चरित्र पर लगाया गया दोष मान लेना सरल है, मानो यह आपके द्वारा वाचा निभाने में असफल रहने की मौन निन्दा हो। परन्तु अधिकतर मित्रों का इस प्रकार दूर हो जाना किसी निर्णय का परिणाम नहीं, वरन् उनके भीतर बैठे गहरे भय से उत्पन्न परिणाम होता है। वे आपके उजड़े हुए जीवन को देखते हैं और उसमें अपने जीवन के भी उजड़ जाने की सम्भावना देखने लगते हैं। आपकी उपस्थिति उन्हें इसलिए असहज कर देती है, क्योंकि वह यह सिद्ध करती है कि "काँटे और ऊँटकटारे" सबसे अधिक सुरक्षित समझे जाने वाले घरेलू सुकून में भी प्रवेश कर सकते हैं।

मैं उस गहरी पीड़ा और अकेलेपन का सामना कैसे करूँ, जब मेरी सबसे बड़ी आवश्यकता के समय मेरा मसीही समुदाय ही मुझसे दूर होता हुआ प्रतीत होता है ?

आपको इस परिस्थिति का सामना उस आत्मा के साहस के साथ करना होगा जो पहले ही सबसे भयंकर पीड़ा से होकर निकल चुका है। आपको यह समझना होगा कि अधिकांश लोग किसी दूसरे व्यक्ति की त्रासदी का भार उठाने के लिए तैयार नहीं होते। वे हर समस्या का समाधान निकालना चाहते हैं, पर न्तु जब उन्हें यह ज्ञात होता है कि आपके जीवन को कुछ बाइबल की आयतों और थोड़ी-सी सांत्वना से "ठीक" नहीं किया जा सकता, तब वे स्वयं अपनी असहाय होने का सामना करना नहीं जानते हैं। इस पीड़ा का सामना करने का अर्थ है कि आप यह अपेक्षा करना छोड़ दें कि कलीसिया की बेंचों से आपको वह सांत्वना मिलेगी जो केवल स्वामी ही दे सकता है। आपको अपने मित्रों को उनके भय के लिए क्षमा करना होगा। यह समझना होगा कि उनका दूर हट जाना आपके मूल्य का प्रमाण नहीं, वरन् उनकी अपनी दुर्बलता का लक्षण है। कलीसिया की बेंच पर अनुभव किया गया यह अकेलापन शुद्ध करने वाली आग के समान है। यह आपको केवल सामाजिक सुविधा पर आधारित सतही संगति से आगे बढ़ाकर उस "प्राचीन मार्ग" की संगति खोजने के लिए बाध्य करता है, जहाँ लोग आपके साथ धूल में बैठने से नहीं डरते हैं। यही वह समय है जब आपको उन कुछ लोगों को खोजना है जो आपके

साथ उस गहरी खाई में खड़े रहने के लिए तैयार हों —ऐसे लोग नहीं जो आपके जीवन के उजड़ जाने की कोई सरल व्याख्या करके उसे टाल देना चाहें, परन्तु ऐसे लोग जो आपके जीवन के कीचड़ को अपने हाथों पर लग जाने के लिए भी तैयार हों।

एकल माता-पिता की बुलाहट

बहुत से लोगों के लिए एकल माता-पिता के जीवन में प्रवेश करना ऐसा अनुभव होता है मानो उन्हें सदा के लिए "दूसरे विकल्प" तक सीमित कर दिया गया हो। वे अपने जीवन को देखते हैं और उन्हें वह उस परिवार का टूटा-फूटा तथा निम्नतर रूप दिखाई देता है, जिसे वे बसाना चाहते थे। वे इस बात का भारी बोझ अनुभव करते हैं कि बच्चों का भरण -पोषण करने वाले, अनुशासन सिखाने वाले और भावनात्मक सहारा देने वाले केवल वही हैं, जबकि उनके बच्चे भी अपने जीवन में आए इस गहरे परिवर्तन के कारण शोक कर रहे होते हैं। समाज—और कभी-कभी कलीसिया भी—"टूटे हुए परिवार" की ऐसी चर्चा करती है मानो वह कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति किसी प्रकार कम हो गई हो या उसका प्रभाव घट गया हो। आप दिन आरम्भ होने से पहले ही थककर जागते हैं और यह सोचते रहते हैं कि क्या आप इस बिखराव के परिणामों के बीच किसी प्रकार जीवित रहने के अतिरिक्त और कुछ भी कर रहे हैं।

मैं अपने एकल माता-पिता के जीवन को एक दुखद "दूसरे विकल्प" के रूप में देखने के स्थान पर अपने जीवन के इस समय की एक विशेष और उच्च बुलाहट के रूप में कैसे देख सकता हूँ?

आपको "आदर्श परिवार" के मोह का त्याग करना होगा और अपनी वर्तमान बुलाहट की कठोर वास्तविकता को स्वीकार करना होगा। परमेश्वर के प्रभुत्व की योजना में कोई "दूसरा विकल्प" नहीं होता है। केवल वही मार्ग होता है जिसे उसने आपके सामने रखा है, और इस समय उस मार्ग में क्रूस की छाया में अपने बच्चों का पालन -पोषण करने का पवित्र परिश्रम सम्मिलित होता है। एकल माता-पिता होना अत्यन्त गंभीर उत्तरदायित्व का प्रबन्ध करना है। आप उस घराने में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के राजदूत हैं, जिसने पतन की हिंसा का अनुभव किया है। जब आप अपने बच्चों का भरण -पोषण करते हैं, तब आप परमेश्वर के पितृत्व को दर्शाते हैं। जब आप उन्हें सांत्वना देते हैं, तब आप स्वयं सहायक की छवि प्रकट करते हैं। यह कोई "निम्न स्तर" की बुलाहट नहीं, वरन् अधिक गहरी बुलाहट है। इसके लिए एक सैनिक का धैर्य और एक पवित्र जन का हृदय चाहिए। आप अपने बच्चों को सिखा रहे हैं कि परमेश्वर की उपस्थिति जीवनसाथी की उपस्थिति पर निर्भर नहीं होती। आप उन्हें दिखा रहे हैं कि स्वामी उजड़े हुए जीवन से भी अपना राज्य खड़ा कर सकता है। आपके द्वारा बनाया गया प्रत्येक भोजन, प्रत्येक पोंछा गया आँसू और अन्धकार में फुसफुसाकर की गई प्रत्येक प्रार्थना आत्मिक युद्ध का एक कार्य है। आप "केवल" एकल माता-पिता नहीं हैं; आपको एक पवित्र उद्देश्य के लिए एक कठिन उत्तरदायित्व सौंपा गया है—अर्थात् स्वामी की सबसे बहुमूल्य धरोहर के प्रबन्धक के रूप में।

सभा में अनुग्रह

तलाक के बाद अपना कलीसियाई घर खोजने का प्रयास करना बारूदी सुरंगों से भरे क्षेत्र में चलने जैसा प्रतीत हो सकता है। एक ओर आपको ऐसी मण्डलियाँ मिलती हैं जिन्होंने "प्रतिज्ञा के भार" को नरम और केवल सांत्वना देने वाले सुसमाचार की वेदी पर बलिदान कर दिया है—अर्थात् ऐसे स्थान, जहाँ पाप का कभी उल्लेख नहीं किया जाता और विवाह के उजड़ जाने को केवल एक छोटी सी असुविधा मान लिया जाता है। दूसरी ओर आपको कठोर और निष्ठुर व्यवस्था वाद वाले स्थान

मिलते हैं, जहाँ "दया की अनुमति" कभी नहीं दी जाती, और आपके साथ ऐसे व्यक्ति के समान व्यवहार किया जाता है मानो आप सदा के लिए बहिष्कृत कर दिए गए हों और आपकी उपस्थिति सभा की पवित्रता को अशुद्ध कर देती हो। इन दोनों में से कोई भी राजा के हृदय को प्रकट नहीं करता है। उजड़े हुए जीवन वाला व्यक्ति ऐसी संगति चाहता है जो पाप को पाप कहने के लिए पर्याप्त रूप से दृढ़ हो और पापी को अनुग्रह से ढाँप लेने के लिए पर्याप्त दयालु भी हो।

मुझे स्थानीय कलीसिया में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए, ताकि वहाँ बाइबल आधारित सत्य और भरपूर दया का आवश्यक संतुलन हो?

आप ऐसी कलीसिया खोजते हैं जो टूटे या बिखरे हुए लोगों के साथ सहज हो। आप ऐसे मंच की खोज करते हैं जो मलाकी के संदेश की गंभीरता से पीछे न हटे, परन्तु साथ ही यरूशलेम के लिए मसीह के आँसुओं के साथ भी बोले। जो कलीसिया वास्तव में पाप की वास्तविकता को समझती है, वह आपके उजड़े हुए जीवन से चकित नहीं होगी, क्योंकि वह जानती है कि भवन में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण भ्रष्टता से उजड़ा हुआ है और बिना योग्यता के मिले हुए अनुग्रह के कारण ही स्थिर है। आप ऐसी संगति की खोज कर रहे हैं जिसके पास केवल "पुनर्स्थापन का कार्यक्रम" ही न हो, वरन् जो पुनर्स्थापन के ईश्वर विज्ञान के अनुसार जीवन भी जीती हो—जहाँ प्राचीन आपके तलाक की धूल में आपके साथ चलने से न डरते हों।

उन स्थानों से दूर रहें जो आपकी असफलता को नया रूप देने या आपके घावों को छिपाने का प्रयास करते हैं। ऐसी मण्डली को खोजें जो आपके साथ उस सहयात्री के समान व्यवहार करे जो ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर बुरी तरह गिर पड़ा हो। आपको ऐसे स्थान की आवश्यकता है जहाँ परमेश्वर का वचन अधिकार के साथ प्रचार किया जाता हो और जहाँ संस्कार ऐसी कोमलता के साथ सम्पन्न किए जाते हों जो दरिद्रों की भूख को भी पहचानती हो। उचित कलीसिया आपसे यह अपेक्षा नहीं करेगी कि उसके सदस्य बनने से पहले आप अपने जीवन को "ठीक" कर लें। वह समझेगी कि केवल स्वामी ही जीवन को ठीक करता है, और वह प्रायः मण्डली के अस्त-व्यस्त और अपूर्ण हाथों के द्वारा ऐसा करता है। ऐसे स्थान में खाई संगति में बाधा नहीं बनती, वरन् वही वह भूमि होती है जहाँ परमेश्वर का अनुग्रह सबसे अधिक स्पष्ट दिखाई देता है । आप किसी "आदर्श" परिवार की खोज नहीं कर रहे हैं, वरन् ऐसे भिखारियों के परिवार की खोज कर रहे हैं जिन्हें जीवन की रोटी मिल चुकी है और जो उजड़े हुए जीवनों के बीच खड़े प्रत्येक व्यक्ति के साथ उस रोटी को बाँटने के लिए उत्सुक हैं।

4

अनुग्रह का कठिन मार्ग

साझा देखभाल का धैर्य

किसी व्यक्ति के पवित्रीकरण की वास्तविक कसौटी भजनों को गाते हुए किसी आरामदायक आराधनालय में नहीं होती। वह तो रविवार की उमस भरी दोपहर में प्रकट होती है, जब आप कंकड़ भरे मार्ग के अंत में खड़े होकर उस कार की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं जो अब आपकी नहीं रही परन्तु उ समें आपके वे बच्चे आने वाले हैं जिन्हें अब आप प्रतिदिन नहीं देख पाते हैं। यही बच्चों को एक-दूसरे को सौंपने की साधारण, थका देने वाली वास्तविकता है। यही जीवन की कठोर वास्तविकता का वह टकराव है, जहाँ गहन ईश्वर विज्ञान का सामना उस भीतर तक झकझोर देने वाली वास्तविकता से होता है जहाँ आपको अपने पूर्व जीवनसाथी का सामना करना पड़ता है—वही व्यक्ति जिसने सम्भवतः आपके विश्वास को चकनाचूर कर दिया था या आपके जीवन को किसी फेंक दिए जाने वाले आवरण के समान तुच्छ समझा था।

साझा देखभाल साधारण बातों का एक प्रबन्धकीय उत्तरदायित्व है। आप केवल एक समय -सारणी का प्रबन्ध नहीं कर रहे हैं, वरन् उन प्राणों के आत्मिक वातावरण का भी ध्यान रख रहे हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपकी देखभाल में रखा है। स्वामी आपसे अपेक्षा करता है कि आप उस मार्ग पर एक परिपक्व व्यक्ति बने रहें, यहाँ तक कि जब आपका हृदय अपने पक्ष में न्याय की माँग करने के लिए चिल्ला रहा हो। यह अलौकिक शिष्टता रोमियों 12:18 में पाई जाती है, जहाँ हमें आज्ञा दी गई है कि जहाँ तक हम पर निर्भर हो, सबके साथ मेल-मिलाप से रहें। अपनी ओर से शान्ति बनाए रखना आपका उत्तरदायित्व है। बच्चों को सौंपने के उस क्षण को युद्ध भूमि बनाने से इनकार करना दुर्बलता नहीं है। यह उस प्रबन्धक का परिश्रम है जो जानता है कि परमेश्वर ही एकमात्र धर्मी न्यायी है। आपके बच्चे यह देखने के लिए ध्यान दे रहे हैं कि जिस परमेश्वर की आप आराधना करते हैं, क्या वह इतना महान है कि बिना किसी घरेलू झगड़े के रविवार की दोपहर को भी सँभाल सके।

बाइबल आधारित साझा देखभाल: उजड़े हुए जीवन में विश्वासयोग्यता का वर्णन

तलाकशुदा माता-पिता के लिए सबसे पीड़ादायक कार्य उन बच्चों के सामने परमेश्वर के स्वभाव के विषय में बताना होता है, जिनका संसार राख के ढेर में समाप्त हो गया है। जब एक घर किसी आपदा-ग्रस्त क्षेत्र के समान प्रतीत होता है, तब सतही उपाय और खोखली धार्मिक बातें काम नहीं आएँगी। बाइबल आधारित साझा देखभाल में गहरी और ईमानदार पारदर्शिता की आवश्यकता होती है। आप पतन के "काँटों और ऊँटकटारों" के विषय में झूठ बोलकर परमेश्वर की प्रतिष्ठा की रक्षा नहीं करते। आप उसकी रक्षा यह दिखाकर करते हैं कि एक विश्वासी तूफान के बीच किस प्रकार का आचरण करता है।

उन्हें भजन संहिता 27:10 की ओर लाएँ: "मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।" यही सबसे बड़ा आधार है। आप उन्हें यह सिखा रहे हैं कि परमेश्वर की उपस्थिति घर में जीवनसाथी की उपस्थिति पर निर्भर नहीं

है। परन्तु इस वर्णन के लिए दूसरे माता -पिता की असफलताओं के विषय में आपका मौन रहना आवश्यक है। जब भी आप अपने पूर्व जीवनसाथी की बुराई करते हैं, तो आप उस कुएँ को विषैला कर देते हैं जिससे आपके बच्चे पीते हैं। इसके स्थान पर विलापगीत 3:22-23 के "अटल प्रेम" का नमूना प्रस्तुत करें। आप "जीवित पत्थरों" से बना एक नया घर बना रहे हैं—सत्य और दया से बना हुआ—न कि उस घरेलू स्वप्न की घास-फूस से, जो परिवार के बिखराव में टिक नहीं सका।

कड़वाहट का जाल: स्वयं न्याय करने की भारी कीमत

तलाक में "जीतने" की इच्छा एक लुभावने अहंकार जैसी होती है। हम अपनी कहानी को स्वीकार करवाना चाहते हैं, मित्रों का साथ चाहते हैं, और अपने पूर्व जीवनसाथी को संघर्ष करते हुए देखकर संतोष पाना चाहते हैं। परन्तु कड़वाहट एक ऐसा धीमा विष है जिसे आप यह आशा करते हुए पीते हैं कि दूसरा व्यक्ति मर जाए। यह आपकी सामर्थ्य को खा जाता है और उस कार्य को देखने से आपको अन्धा कर देता है जो स्वामी आपके भीतरी अस्तित्व में कर रहा है। मत्ती 18 में हम स्वयं को उस निर्दयी दास के समान देखते हैं—जिसका ऐसा बड़ा ऋण क्षमा किया गया था जिसे वह कभी चुका नहीं सकता था, फिर भी वह भावनात्मक विनाश के ऋण के कारण अपने पूर्व जीवनसाथी का गला पकड़ लेता है।

कड़वाहट पतित संसार को स्वीकार करने से इनकार करना है। यह राजा के हाथ से न्याय का हथौड़ा छीन लेने का प्रयास है। विश्वासघाती जीवनसाथी को क्षमा करने का अर्थ यह नहीं है कि उसका विश्वासघात "सही था"; इसका अर्थ है कि उस ऋण को स्वामी के हाथों में सौंप देना और उसे अपने ही तहखाने में सड़ने न देना। आपका प्राण इतना अनमोल है कि उसे सदा के लिए उनके पापों से बाँधकर नहीं रखा जा सकता। आप आरोपों को छोड़ देते हैं, क्योंकि आपके राजा ने आपके विरुद्ध लगाए गए आरोपों को छोड़ दिया है। यही अनुग्रह का कठिन परिश्रम है। यह उजड़े हुए स्थानों से बाहर निकलने का एकमात्र मार्ग है। यदि आप अभी भी अपने पीछे के पुल को जलाने का प्रयास कर रहे हैं, तो आप नए नगर की ओर नहीं जा सकते हैं।

5

स्वामी का सुधार कार्य

घावों वाला परमेश्वर

हम प्रायः एक ऐसे निष्कलंक पुनरुत्थान की लालसा करते हैं—अर्थात् एक ऐसी उजली विजय की, जिसमें हमारी असफलताओं की टेढ़ी-मेढ़ी स्याही के निशान सरलता से मिट जाते हैं। हम चाहते हैं कि पीड़ा की स्मृति हमारे गूदे-गूदे से मिटा दी जाए। परन्तु यह ऊपर के कमरे वाला मसीह नहीं है। यूहन्ना के सुसमाचार में, पुनरुत्थित प्रभु अपने हाथ और अपनी पसली दिखाता है। वह संदेह करने वाले को उन घावों को छूने के लिए आमंत्रित करता है जिन्होंने उसे घायल किया था। मसीह ने अपने घावों के निशान बनाए रखे। वे उसके प्रेम के अनन्त प्रमाण हैं और इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि आत्मा के लिए युद्ध वास्तविक था। छेद बने रहे, परन्तु पीड़ा चली गई। वे अब खुले हुए घाव नहीं थे; वे उस विजय के रूपान्तरित प्रमाण थे जो जीवन के कठिन मार्ग की खुरदरी भूमि पर प्राप्त हुए थे।

टूटे हुई वाचा के मलबे में खड़े विश्वासी के लिए, यही एकमात्र ईश्वर विज्ञान है जिसका पर्याप्त महत्व है। आपको भय है कि आपका तलाक आपको एक पीड़ित के रूप में परिभाषित करेगा, और अस्वीकार किए जाने के तीखे किनारे शान्त घर में हर सुबह को चिह्नित करेंगे। परन्तु घावों वाले परमेश्वर को देखें। वह “सिद्ध” सामग्री से निर्माण नहीं करता। वह उजड़े हुए स्थानों में कार्य करने में निपुण है। हमारी परम्परा में, परमेश्वर की व्यवस्था केवल सृष्टि का ठंडा और दूर से किया जाने वाला प्रबन्धन नहीं है। वरन् यह हमारी विपत्तियों को अपने हाथों से नए उद्देश्य के लिए उपयोग करने का कठिन कार्य है। आपका तलाक एक उजड़ा हुआ स्थान है, आघात का स्थान है। फिर भी, स्वामी उससे घृणा नहीं करता। वह मानव हृदय के टूटे हुए अवशेषों में कार्य करता है।

वह आपके भरोसे के टुकड़ों और टूटे हुए स्वप्नों के टुकड़ों को लेकर आत्मा की एक नई संरचना करता है। वह पीड़ा को मिटाता नहीं है; वरन् वह घाव के निशान को उस रचना में सम्मिलित कर देता है। घावों के निशान पतन के विषय में सच्चाई बताते हैं, परन्तु अब उनमें आपको पूरी रीति से तोड़ देने की सामर्थ्य नहीं है। परमेश्वर इन उजड़े हुए स्थानों का उपयोग ऐसा हृदय बनाने के लिए करता है जो “सिद्ध” जीवन से कहीं अधिक उस पर निर्भर और अनुग्रह से अधिक घनिष्ठ रूप से परिचित होता है। घाव का निशान वह स्थान है जहाँ अब उसकी दया का प्रकाश प्रवेश करता है।

छुटकारे की दूरगामी दृष्टि

शत्रु उस मौन घड़ी में जो सबसे बड़ा झूठ फुसफुसाता है, जब न्यायालय के आदेश पर हस्ताक्षर हो चुका होता है, वह यह है कि आपके जीवन के वाक्य पर पूर्ण विराम लग चुका है। आपको ऐसा प्रतीत होता है मानो चलचित्र अभी समाप्त भी नहीं हुआ, परन्तु उसके समापन-श्रेय पहले ही चलने लगे हों जबकि आप अभी भी सिनेमा हाल में ही बैठे हैं। आप खाली कुर्सी

को या विभाजित बैंक खाते को देखते हैं, और स्वयं को यह विश्वास दिला देते हैं कि अब आप परमेश्वर के राज्य में केवल एक "गौण अंश" मात्र रह गए हैं—ऐसी कहानी का अवशेष जिसका अन्त विनाशकारी असफलता में हुआ है। परन्तु यह अल्पदृष्टि रखने वाले मन का व्यर्थ भ्रम है। हम उस परमेश्वर की आराधना करते हैं जो महीनों या वर्षों की नहीं, वरन् शताब्दियों और पीढ़ियों की दृष्टि से कार्य करता है। छुटकारा एक दीर्घकालिक, धैर्यपूर्वक परिपक्व होने वाली दया है। यह उस सत्य की वास्तविकता है जो "यह पहले से ही आरम्भ हो चुकी है, परन्तु अभी अपनी परिपूर्णता तक नहीं पहुँची है।" और आगे बढ़ते रहने का साहस हमें तभी प्राप्त होता है जब हम उन पवित्र लोगों के प्राचीन मार्गों की ओर दृष्टि करते हैं, जो हमसे पहले टूटे थे, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें सँभाला और आगे बढ़ाया।

यूसुफ को देखिए, जो गड्ढे में पड़ा था और जिसे उसके अपने ही भाइयों ने बेचकर पराए देश के एकांत में भेज दिया था। इस्राएल पर दृष्टि कीजिए, जो बाबुल की धूल में बैठा यह सोच रहा था कि क्या उनके विद्रोह की तपिश में परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ निष्फल हो गई हैं। उस निर्वासन के समय उन्हें ऐसा प्रतीत होता था मानो सब कुछ समाप्त हो गया हो। परन्तु परमेश्वर अपने प्रबन्धन में केवल घटनाओं को ऐसे समाधान की ओर ले जा रहा था, जिसकी वे उस समय कल्पना भी नहीं कर सकते थे। आपका तलाक एक विनाशकारी अध्याय है, परन्तु वह सम्पूर्ण पुस्तक नहीं है । स्वामी की लेखनी अभी रुकी नहीं है। वह अभी भी लिख रहा है। और वह ऐसा लेखक है जिसे कहानी में ऐसा अनपेक्षित मोड़ देनाअच्छा लगता है, जो अयोग्य लोगों पर किए गए उसके अनुग्रह की महिमा को और अधिक स्पष्ट कर दे। छुटकारे के दीर्घकालिक दृष्टिकोण की माँग है कि आप बीते हुए कल के मलबे को घूरना बन्द कर दें और राजा के अनन्त अटल निर्णय में विश्राम करना आरम्भ करें।

रोमियों 8:28 कोई ऐसा सांत्वना देने वाला वचन नहीं है, जिसका उद्देश्य केवल कुछ समय के लिए आपके दर्द को कम करना हो। यह एक दृढ़ और अटल प्रतिज्ञा है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें—यहाँ तक कि विश्वासघात, न्यायालय के खर्चे, सन्तानों की साझा देखभाल, और गहरा अकेलापन भी —मिलकर ऐसी भलाई के लिए कार्य करते हैं, जिसे आप अभी नहीं देख सकते हैं। यह "भलाई" आवश्यक नहीं कि आपको आपका पुराना जीवन फिर से मिल जाए या आपका पुनर्विवाह हो जाए। यह उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह आपको मसीह के स्वरूप के अनुसार बदलने का कार्य है। इस दीर्घकालिक दृष्टिकोण का अर्थ यह समझना है कि परमेश्वर को आपके पारिवारिक सुख से अधिक आपकी पवित्रता की चिन्ता है। वह आपको एक लम्बे मार्ग से ले जा रहा है, ताकि आपके जीवन में आत्मिक फल उत्पन्न हों, जैसा उस विवाह की सुरक्षित अवस्था में रहते हुए कभी नहीं हो सकता था।, जिसे आपने अपने जीवन का सबसे बड़ा आधार बना लिया था। कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। स्वामी केवल अगला पृष्ठ पलट रहा है, ताकि आपको उस अध्याय तक ले जाए जहाँ आपकी निर्बलता में उसकी सामर्थ्य पूरी रीति से प्रकट होती है।

पालनहार में विश्राम करना

त्याग दिया जाना उस पतन की सबसे पीड़ादायक गूँज है, जिसका अनुभव कोई भी मनुष्य कर सकता है। जिस व्यक्ति ने जीवन भर साथ निभाने की वाचा बाँधी थी, उसी के द्वारा ठुकराया जाना ऐसी पीड़ा होती है, जो आपके अस्तित्व के सबसे भीतर तक पहुँच जाती है। इससे घर में ऐसा खालीपन और सन्नाटा छा जाता है, जिसे कोई भी शोर वास्तव में नहीं भर सकता है। आपको ऐसा लग सकता है कि आपके जीवनसाथी ने आपको छोड़ दिया है, शायद उन मित्रों ने भी, जो समझ

नहीं पाए कि क्या कहें। और रात के अन्धेरे में आपको यह भी महसूस हो सकता है कि स्वयं स्वामी ने भी आपको छोड़ दिया है। आप सोचने लगते हैं कि शायद परमेश्वर अब उन परिवारों की ओर ध्यान दे रहा है जो बिखरे हुए नहीं हैं, और आपको अपने जीवन के काँटों और ऊँटकटारों से अकेले ही जूझने के लिए छोड़ दिया है। परन्तु शान्ति अव्यवस्था के समाप्त हो जाने में नहीं मिलती है। वह पालनहार की उपस्थिति में मिलती है। इसलिए आपको यशायाह 54:5 के इस अटल सत्य में विश्राम पाना चाहिए: "क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है; उसका नाम सेनाओं का यहोवा है।"

यह अकेले रहने वाले लोगों को सांत्वना देने के लिए कही गई कोई भावुक उपमा नहीं है। यह त्याग दिए गए प्राण के लिए एक वैधानिक और आत्मिक घोषणा है। जब सांसारिक पालनहार साथ छोड़ देता है, तब स्वर्गीय पालनहार और भी निकट आ जाता है। खाली घर इस बात का प्रतीक नहीं है कि परमेश्वर अनुपस्थित है; वरन् यह उस परमेश्वर के साथ और भी गहरी तथा निकट संगति का निमंत्रण है, जो न कभी आपको छोड़ेगा और न त्यागेगा। इस समय प्रबन्ध करने का अर्थ उस "शान्ति" या "सन्नाटे" को एक पवित्र स्थान के समान ग्रहण करना है। इसका अर्थ है कि आप अपने भीतर के खालीपन को ध्यान भटकाने वाली व्यर्थ बातों या जल्दबाजी में बनाए गए नए सम्बन्धों की निरर्थकता से भरने से इन्कार करें। इसका अर्थ उस परमेश्वर की प्रभुता में विश्राम करना है, जो कौओं को भोजन देता है और सोसन के फूलों को वस्त्र पहनाता है। यदि वह सारे संसार को सम्भाल सकता है, तो वह कम धन और भारी मन वाले प्राण को भी सम्भाल सकता है।

जब आप त्याग दिए जाने की स्थिति को स्वयं ठीक करने का प्रयास करना छोड़ देते हैं और इस सत्य में विश्राम करने लगते हैं कि सृष्टिकर्ता आपको पूरी रीति से जानता है और आपसे सिद्ध प्रेम करता है, तभी आपको सच्ची शान्ति मिलती है। आप इस अकेलेपन के प्रबन्धक हैं। आप इस सन्नाटे के प्रबन्धक हैं। और स्वामी इस समय का उपयोग आपको यह दिखाने के लिए कर रहा है कि वही आपके लिए पर्याप्त है। केवल वही है—न कि वह और जीवनसाथी। केवल वही—न कि वह और लोगों का आदर। केवल वही। जब आप अपनी सामर्थ्य की सीमा तक पहुँच जाते हैं, तब आपको उन अनन्त भुजाओं का सहारा मिलता है, जो आरम्भ से ही आपको थामे हुए हैं। मार्ग कठिन है और बिखराव वास्तविक है, परन्तु स्वामी उसी बिखराव के बीच खड़ा होकर ऐसी रचना कर रहा है, जिसे कोई आग नष्ट नहीं कर सकती है। वहीं पर विश्राम कीजिए। सुबह होने वाली है।

निष्कर्ष

एक ऐसी सर्दी में, जो समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती, उसमें एक कठोर परन्तु आवश्यक अनुग्रह छिपा होता है। हम पाले को बगीचे का शत्रु समझते हैं, ऐसी ठंडी पकड़, जिसका उद्देश्य केवल मिट्टी के नीचे छिपे जीवन को दबा देना है। परन्तु मिट्टी एक अलग ही सत्य जानती है। हल्की सर्दी एक अभिशाप है; वह मिट्टी को जमा देती है, चिकनी मिट्टी को भारी और अभेद्य बनाए रखती है, और उथली जड़ों वाले खरपतवार अँधेरे में बढ़ते रहते हैं। परन्तु केवल गहरा और कड़ाके का पाला—जो धरती की गहराई तक पहुँच जाता है—पुराने वर्ष की पकड़ को तोड़ने की सामर्थ्य रखता है। बर्फ मिट्टी की छिपी हुई दरारों में फैल जाती है और उस कठोरता को तोड़ देती है, जिसे कोई हल कभी नहीं तोड़ सकता है। जब अन्ततः पाला पिघल जाता है, तब उसी कठोर सर्दी से पड़ी दरारें नए जीवन के लिए मार्ग खोल देती हैं।

जो बगीचा ऐसी कड़ाके की सर्दी को सह लेता है, वह किसी नाजुक फूल की कोमल सुन्दरता के साथ नहीं निकलता। वह पहले से अधिक मजबूत होकर निकलता है। उसके डंठल अधिक मोटे होते हैं, क्योंकि उन्हें उस मिट्टी को चीरकर ऊपर आना पड़ा था, जो पूरी तरह बदल चुकी थी। उसके रंग अधिक गहरे होते हैं, क्योंकि उसकी जड़ों को पोषण पाने के लिए धरती की और अधिक गहराई तक जाना पड़ा था, जहाँ सतह अब उन्हें कुछ नहीं दे सकती है। यही कठोर मार्ग का रहस्य है। जिस बात को हम अपने आत्मिक जीवन के लिए विनाशकारी समझते हैं—जैसे घर का बिखर जाना, कमरों का सन्नाटा, और टूटी हुई वाचा का संघर्ष—उसी का उपयोग स्वामी आत्मा की भूमि को तैयार करने के लिए करता है। वह ऐसा माली नहीं है जो पाले को देखकर चौंक जाए। वह सर्दी पर भी अधिकार रखता है। वह भली -भाँति जानता है कि मिट्टी टूटकर नई सुबह के बीज को ग्रहण करने के लिए तैयार होने से पहले कितना दबाव सह सकती है। आप अपने पारिवारिक सपने के जले हुए अवशेषों को देखकर एक कब्रिस्तान देखते हैं। परन्तु स्वामी उसी भूमि को देखकर ऐसा खेत देखता है, जो अब पहली बार सचमुच फसल के लिए तैयार हो चुका है।

हम प्रायः इस व्यर्थ सोच में पड़ जाते हैं कि हमारी असफलताएँ परमेश्वर के अटल निर्णय से भी अधिक शक्तिशाली हैं। हम अपने जीवन के उजड़े हुए भागों में बैठे अपने पाप और उसकी पवित्रता के बीच की गहरी खाई को नापते रहते हैं और यह मान लेते हैं कि अब जाकर हमने उसके अनुग्रह की सीमा खोज ली है। परन्तु अनुग्रह कोई उथला तालाब नहीं है, जो हमारे विद्रोह की बढ़ती हुई तपिश से सूख जाए। वह तो धरती की गहराइयों को हिला देने वाली सामर्थ्य है। वह उस वाचा का लहू है, जो संसार की उत्पत्ति से पहले ही ठहराया जा चुका था। यदि आज रात आपका हृदय टूटा हुआ है, तो इसका कारण यह नहीं कि परमेश्वर ने आपको छोड़ दिया है।; वरन् यह है कि वह आपके जीवन की गहराइयों में अपना कार्य कर रहा है। उसका अनुग्रह ऐसा कोई आसान उपाय नहीं है, जो आपके जीवन के बिखराव के विषय में आपको केवल कुछ समय के

लिए अच्छा महसूस करा सके। परन्तु वह ऐसी अटल दया है, जो आपके साथ धूल में भी बनी रहती है और सर्दी को अन्तिम वचन नहीं कहने देती है। क्रूस सबसे बड़ी सर्दी थी, ऐसा क्षण जब ऐसा लगा मानो ज्योति सदा के लिए बुझ गई हो। फिर भी वही वह भूमि बनी, जिसमें पुनरुत्थान ने अपनी जड़ें जमाईं। आपका टूटा हुआ हृदय आपकी कहानी का एक अँधेरा अध्याय है, परन्तु उसे वह हाथ लिख रहा है, जिसने पहले ही कब्र पर विजय पा ली है।

प्रार्थना

हे उजड़े हुए जीवन के स्वामी, आज रात उस व्यक्ति पर दृष्टि कर, जो सन्नाटे में अकेला बैठा है। घर में सन्नाटा छाया हुआ है, और खाली कुर्सी का बोझ उसकी सहन-शक्ति से अधिक बढ़ गया है। टूटी हुई वाचा की लज्जा मानो घर के गलियारे में फुसफुसा रही है, और भविष्य का भय खिड़की से टकराती हुई ठंडी हवा के समान उसके सामने खड़ा है। हम प्रार्थना करते हैं कि तू उसी धूल में उससे आकर मिल। उसके हृदय की कठोर मिट्टी को तोड़ और उसे स्मरण दिला कि तू वही परमेश्वर है, जो सचमुच मरी हुई बातों में भी नया जीवन देने में योग्य है। पाला हटने तक धी रज के साथ उसे प्रतीक्षा करने दे। उसे अपनी असफलता की आराधना करने न दे, वरन् उसे फिर से उस प्राचीन मार्ग पर ले चल, जहाँ मसीह का लहू उसके अपने पछतावे से कहीं उत्तम बात कहता है। उसे वह शान्ति दे, जो यह जानने से मिलती है कि उसका नाम उस राजा की हथेलियों पर लिखा हुआ है, जिसने अपने घावों को सँभाले रखा। हम पुराने जीवन में लौटने की प्रार्थना नहीं करते, वरन् उस सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं जिससे वह नए नगर की ओर चलता रहे, जहाँ उसका प्रत्येक आँसू महिमा में बदल दिया जाएगा और उसके जीवन का प्रत्येक उजड़ा हुआ भाग तेरे प्रभुता के अनुग्रह के द्वारा फिर से बसा दिया जाएगा।

आमीन।

THE MENTORING PROJECT

डॉ. रिचर्ड जॉन परहाई, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्ना कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे "एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस" (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।